हिन्दी - विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

स्नातक, पार्ट - 03

विषय - अलंकार

अलंकार की परिभाषा — काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्द को अलंकार कहते हैं। अर्थात जिस माध्यम से काव्य की शोभा में वृद्धि होती है, उसे अलंकार का नाम दिया गया है।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि भाषा को शब्दों के अनुपम अर्थ से सुसज्जित करने वाले चमत्कारपूर्ण ढंग को अलंकार कहा जाता है। अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है — अलम + कार। यहाँ पर अलम का अर्थ होता है आभूषण। मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है। जिस तरह से एक नारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती है, उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अर्थात जो शब्द काव्य की शोभा बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद —

(1) शब्दालंकार
(2) अर्थालंकार
(3) उभयालंकार

(1) शब्दालंकार — शब्दालंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है — शब्द + अलंकार।

शब्द के दो रूप होते हैं — ध्वनि और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालंकार की सृष्टि होती है। जब अलंकार किसी विशेष शब्द की स्थिति में ही रहे और उस शब्द की जगह पर कोई और पर्यायवाची शब्द को रख देने से उस शब्द का अस्तित्व न रहे, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार के भेद; —

(1) अनुप्रास अलंकार
(2) यमक अलंकार
(3) पुनरुक्ति अलंकार
(4) विप्सा अलंकार
(5) वक्रोक्ति अलंकार
(6) श्लेष अलंकार

(1) अनुप्रास अलंकार — अनुप्रास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है — अनु + प्रास। यहाँ पर अनु का अर्थ है — बार-बार और प्रास का अर्थ है — वर्ण। जब किसी वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो तब जो चमत्कार होता है उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं। —

उदाहरण — 'तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये'

इस पंक्ति में 'त' वर्ण की आवृत्ति है।

अनुप्रास अलंकार के भेद —

छेकानुप्रास अलंकार,
वृत्यानुप्रास अलंकार,
लाटानुप्रास अलंकार,
अन्त्यानुप्रास अलंकार,
अन्त्यानुप्रास अलंकार

छेकानुप्रास अलंकार – जहाँ पर स्वरूप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एक बार हो, वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है।

जैसे – "रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै।
साँसैं भरि आँसू भरि कहत दई दई॥"

वृत्यानुप्रास – जब एक व्यंजन की आवृत्ति अनेक बार हो वहाँ वृत्यानुप्रास होता है। जैसे –

"चामर-सी, चन्दन-सी, चंद-सी,
चाँदनी चमेली चारु चंद-सुघर है।"

लाटानुप्रास – जहाँ शब्द और वाक्यों की आवृत्ति हो पर अर्थ भी अन्वय करने पर भिन्नता आ जाये वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। अर्थात शब्द की आवृत्ति में अर्थ नहीं बदले।

जैसे – 'तेगबहादुर, हाँ वे ही थे गुरु-पदवी के पात्र समर्थ
तेगबहादुर, हाँ वे ही थे गुरु-पदवी थी जिनके अर्थ

अन्त्यानुप्रास – जहाँ वर्णों की आवृत्ति हो और अंत में तुक मिलती हो। जैसे –

"लगा दी किसने आकर आग।
कहाँ था तू संशय के नाग।"

श्रुत्यानुप्रास – जहाँ पर कानों को मधुर लगने वाले वर्णों की आवृत्ति हो उसे श्रुत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं। —

"दिनांत था, थे दीननाथ डुबते,
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।"